प्रातः क्लास 30-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझाते हैं और बहुत अच्छी रीति समझाते हैं। बैठते जब यहां बैठते हैं, घर को तो याद करते होंगे। अभी अपने घर जाना है। जैसे लौकिक घर याद आता है ना। लौकिक घर से तुम यहां आये हो पारलौकिक घर का रास्ता जानने लिये। बाप बच्चों से बात करते हैं बच्चे समझते हो हम बेहद के बाप के बच्चे हैं। बाप आये हैं ही हैं बच्चों को घर ले जाने। तो देखो यह पारलौकिक बाप कैसे बैठ पूछते हैं। मीठे2 बच्चे घर जाना है ना। मैं को बुलाया भी तुमने है कि आकर घर ले चलो परन्तु हम पतित हैं। पावन भी आप को बनाना पड़ेगा। समझते हो घर से हम पहले2 नई दुनिया में आये थे। यह याद है तब कहते हो बाबा फिर से हमको घर ले चलो। क्योंकि घर का पता नहीं है बच्चों को। बात कितनी छोटी है। सभी आत्मायें बाप को पुकारती हैं बाबा आकर हमको अपने घर ले चलो। यहां तुम पराये घर(रावण-राज्य) में हो। यह सारा रावणराज्य है। रावण के घर में तुम बैठे हो। एक सीता की बात नहीं। तुम जानते हो जो भी मनुष्य मात्र स्त्री वा पुरुष सभी में आत्मा है। वह आत्मायें सभी एक बाप के बच्चे हैं। पहले तुमको यह पता नहीं था। क्योंकि सभी रावण के जेल में फँसे हुये थे। तुम अपने को कैदी समझते थे। मनुष्य कैद में दुःखी होते हैं। या गर्भ में भी सजा भोगते हैं तो दुःखी होते हैं। गर्भ जेल कहा जाता है। सतयुग में तो है गर्भ महल। यहां गर्भजेल में बहुत दुःख मिलते हैं। इसलिये कहते हैं बाहर निकालो। फिर हम पाप आदि नहीं करेंगे। जेल में नहीं आवेंगे। यहां भी मनुष्य जब दुःखी होते हैं तो पुकारते हैं। यह है ही पतित दुनिया। जरूर पावन दुनिया सतयुग था। तब पुकारते हैं बाबा पतित-पावन आओ। अभी जो खुद ही पुकारते हैं वह पावन दुनिया की स्थापना तो कर न सके। बापू जी भी पुकारते थे तो खुद रामराज्य कैसे स्थापन करेंगे। अभी तो रामराज्य और रावण राज्य के अर्थ कोभी समझ गये हो। आधा कल्प है रामराज्यअर्थात ईश्वरीय राज्य। अभी है आसुरी राज्य। अभी बाप आये हैं ईश्वरीय राज्य अर्थातस्वर्ग में ले जाने। तो यहां तुम बच्चे बैठे हो तो नालेज अन्दर में मथन होनी चाहिए। समझते हो हम यहां आये हैं नई दुनियास्वर्ग में जाने लिये। अभी तुम बच्चों को समझ पड़ी है। आगे इतनी समझ नहीं थी। अभी समझते हो आधा कल्प रावणराज्य में हम बन्द थे। विषय सागर में गोता खाते थे। क्षीर सागर स्वर्गको, विषय सागर नर्क को कहा जाता है। त्रेता को भी पूरा स्वर्ग नहीं कहा जाता। अभी तुम बच्चों को सारी रचना के आदि-मध्य-अन्त की नालेज मिलती है। पहले थोड़ेही पता था। कब कोई ने सुनाया भी नहीं। बाप को जानते थे? भला अपने आत्मा को जानते थे? आत्मा भृकुटि के बीच सितारे मिसल है। बस सिर्फ इतना ही जानते थे कि वह सितारा है। बाकी यह थोड़ेही मालूम था इतनी छोटी सी आत्मा में इतने 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। सैकेण्ड और मिनीट थोड़ेही जानते थे। अभी बन्डर खाते हो कितनी छोटी चीज़ है। एक भी मनुष्य अपने को आत्मा नहीं जानते। आत्मा को रीयेलाईज नहीं करते कि आखरीन आत्मा क्या चीज़ है। अभी तुम समझते हो हमारी आत्मा में सारा पार्ट भरा हुआ है। 84 जन्म कोईसभी ई थोड़ेही लेते हैं। कोई तो एक जन्म भी लेते हैं। आत्मा कितनी छोटी है उन में सारा पार्ट है। बाबा ने समझाया है तुम 84 जन्म कैसे लेते हो। पार्ट बजाने वाली आत्मा है। आत्मा अकेली क्या करेंगी। शरीर द्वारा पार्ट बजाती हैं। सतयुग में आत्मा एक ही शरीर लेकर 150वर्ष पार्ट बजाती हैं। जैसे शुट हो जाता है। फिर 5000वर्ष बाद वही स्पट चलेंगी। तुम भी अभी पुरुषार्थ करते हो यह बनने लिये। यहां तुम आये ही हो यह बनने लिये। सत्यना0 की कथा सुनते थे परन्तु वह तो सभी हैं झूठ। अमरनाथ पार्वती की कथा सुनते थे। परन्तु क्या सुनाते थे वह किसको भी पता नहीं। अमरपुरी का मालिक बनाते थे वह भी कैसे। द्रौपदी के लिये दिखाते हैं कि वह पुकारती थी नंगन होने से बचाओ। अच्छा फिर क्या करेंगी। नंगन होने का अर्थ क्या था। कुछ भी नहीं समझते। क्या तुम पहले समझते थे? यह मालूम था कि यह ही फिर ल0 बनने वाली हैं। जो फिर 21 जन्म कब नंगन होंगी ही नहीं। अभी तुम जानते हो और खुद पुरुषार्थ भी करते हो भविष्य में ऊंच पद पाने। बाकी भक्तिमार्ग की कथायें तो ढेर सुनते आये। तीजरी की भी कथा सुनाते हैं ना। परन्तु तीसरे नेत्र

के अर्थ का भी किसको पता नहीं हैं। अभी ज्ञान का तीसरा नेत्र तुमको मिलता है। बाप ही आकर ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। जिससे सृष्टि के आदि मध्य अन्त को तुम जान जाते हो। यह ड्रामा कैसे चक्र लगाता है कितनी आयु है, तुम जानते हो। टाईम भी तुम देते हो ना सतयुग को इतने वर्ष, त्रेता को इतने वर्ष ... फिर भक्ति मार्ग में तुम लाखों वर्ष कहने लग पड़ेंगे। यह ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। अभी तुम यहां सुनते हो तो भक्ति और ज्ञान में रात-दिन का फर्क दिखाई पड़ता है। कहते हैं ना इसमें तो रात-दिन का फर्क है। यह क्यों जाता है। रात को रात, दिन को दिन कहा जाता है। इसमें दिन और रात की फर्क की क्या बात है। रात और दिन की तो भेंट की भी नहीं जाती है फिर ऐसा क्यों कहते हैं। अभी यह है बेहद की बात। आधा कल्प सतयुग त्रेता तुम राज-भाग पाते हो उसको कहा जाता है दिन। फिर आधा कल्प तुम भक्ति में आते हो इसको कहा जाता है रात। बाप आकर तुमको समझाते हैं अभी फर्क देखा। ज्ञान दिन और भक्ति रात का फर्क। रावण के राज्य में है दुःख। राम के राज्य में है सुख। कितना फर्क हो गया है। यहां अभी तुम आये हो स्वर्ग वासी बनने लिये। कितनी खुशी से आते हो। तुम्हारी खुशी गाई हुई है। गोपी वल्लभ के गोप-गोपियों से पूछो। गोपी वल्लभ तो शिव बाबा हुआ ना। एक वल्लभ के सभी गोप-गोपियां हैं। तो प्रजापिता ब्रह्मा हो जाता। और फिर आत्मा के रूप में सभी एक बाप के बच्चे हैं। तो यह नालेज तुमको अभी मिलती हैं। आत्मायें तो सभी भाई2 हैं। फिर प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे बनते हो तो भाई बहन हो जाता है। यह भी समझाया जाता है कि बहन भाई क्यों बनाते हैं। क्योंकि बहन भाई का नाता प्यार का रहता है। उसमें स्त्री पुरुष की दृष्टि नहीं जावेगी। परन्तु देखा जाता है इस नाते में भी नाम-रूप में आ जाते हैं तो इससे भी ऊपर ले जाते हैं एक दो को आत्मा भाई2 समझो। यह तो जानते हो हम आत्मा पढ़ती हैं। परमपिता परमात्मा हमको पढ़ाते हैं। आत्मा को यह कान मिले है सुनने लिये। तुम असल में हो आत्मा। परन्तु अपने को देह समझ बैठे हो। अच्छा फिर प्रश्न उठता है क्या सतयुग में भी अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे? नहीं।। यह अभी के लिये हैं क्योंकि अभी पतित से पावन बनना है। वहां कोई देहीअभिमानी होकर नहीं चलेंगे। अभी कहा जाता है अपने को आत्मा समझो। हम आत्मा हैं फलाने नामरूप वाली। वहां ऐसे नहीं कहना होता है। यहां कहा जाता है क्योंकि पावन बनकर जाना है। वहां तो सीढ़ी उतरनी हैं ना। एकएक पायन्ट अच्छी रीत धारण करनी समझनी है। घर-गृहस्थ में रहतेभी अपना पार्टनहीं भूलनाहै। जैसे गाय खाना खाती है फिर उगारती रहती है। तुमको भी नाले भूलनी न चाहिए। इसमें मंथन करना होता है। एकान्त में सुमिरणकरनाचाहिए। सिमर2 ... अच्छी सिमरनी औरों को भी सुनाना है। सिमर2 सुख पाओ अर्थात सुखधाम का मालिकबन जावेंगे। कल कलेश बिमारीआदि सभी छूट जावेंगे। अनेकों को सुमिरण करने सेरोगी बन जातेहो। उनको ही कहा जाता हैदुःखधाम। तमो0 है ना। यह है रावण राज्य। नर्क। सतयुग को कहा जाता है स्वर्ग। सुख औरदुःख मे रातदिन का फर्क कहते हैं। कोई चीज होती है कहेंगे आठ आने गज है, और यह 5रुपये गज है। यह तो रातदिन का फर्क है। तुमको भी समझना चाहिए स्वर्ग और नर्क में रात दिन का फर्क है। स्वर्ग में सदैव सुख है। नर्क में सदैव दुःख है। वहां है अपार सुख। यहां है अपार दुःख। यह नर्क है। मूल बात है नर्क और स्वर्ग को समझना। स्वर्ग कितना समय चलता है नर्क कितना समय चलता है। बाप तुम बच्चों को बहुत2 सुख देते हैं। बाप स्वर्गवासी बनाते हैं। समझना चाहिए हम स्वर्ग में कितने अथाह सुख देखते हैं। यहां तो दुःख ही दुःख है। फिर भी तुम यहां आते हो तो उस दुनिया का कुछ भी याद नहीं नहीं पड़ता है। वह तो सभी झूठी बातें हैं। इसलिये उनका कुछ भी ख्याल नहीं चलता। अगर लाखों वर्ष स्वर्ग का देते हैं तो जरूर नर्क को थोड़े वर्ष देंगे ना। तो यह भी कहे ना बाबा आप सुख तो बहुत लाखों वर्ष देते होदुःख तो बहुत थोड़ा देते हो। यह भी समझ चाहिए ना। बाप बैठ समझाते हैं यह कल्प ही 5000वर्ष का है। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। सतयुग है स्वर्ग। 16 कला सम्पूर्ण। फिर दिन प्रति दिन मनुष्य वृद्धि को पाते जाते हैं। पहले जरूर थोड़े होंगे। उन्हों को कहा जाता

है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। नानक ने भी कहा है मानुष से देवता किये करत न लागे वार। कब? सुनते तो हैं ना। भगवान ने मनुष्य को देवता, नर्क को स्वर्ग बनाया। परन्तु ग्रन्थ पढ़ने वाले यह थोड़े ही समझते हैं। परन्तु ग्रन्थ पढ़ने वाले यह थोड़े ही समझते हैं। है तो बहुत क्लीयर। मानुष को देवता बनाया। देवतायें हैं पावन। उनको वायसलेस वर्ल्ड कहा जाता है, पवित्र दुनिया। शिवालय। यह है अपवित्र दुनिया वेश्यालय। मानुष्य से देवता किये करत न लागे वार। कितना से समय? सेकण्ड। एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति। एक सेकण्ड में कौड़ी से हीरे जैसा बन सकते हो। तुम कहते हो हम आये हैं कौड़ी जीवन से हीरे जैसा जीवन बनने। यह देवी देवतायें हीरे जैसे हैं। तबतो इनके आगे जाकर नमस्कार करते हैं। तुम कहेंगे हम यह बनते हैं। कल्प2 बनते आये हैं। बाप समझाते हैं भक्ति मार्ग में तुम जो कुछ सुनते आये हो वह सारा ड्रामा में नूंध है। अथाह ढेर के ढेर कथायें हैं। तुमको तो सिर्फ याद करना है हम आत्मा हैं, और बाप को याद करना है। बाबा आया हुआ है। बस बाबा कहना कितना मीठा है। और सीधा अक्षर है। सभी का बाप परमधाम से आया हुआ है। बाप आकर टीचर बन पढ़ाते हैं। मनुष्य से देवता बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम पतित हो ना। कहते भी हो हे पतित पावन ··· तो क्या तुमको गंगा वा पानी का सागर याद आता है? परमपिता परमात्मा को याद करते हो ना। आत्मा अपने बाप को याद करती है। आत्मा एक हद का बाप दूसरा है बेहद का बाप। वह है सभी आत्माओं का बाप। परन्तु यथार्त रीति कोई भी न अपने को न बाप को समझ सकते हैं। ऐसे ही सिपत्तोते मिसल कह देते हैं। इसलिये जानवरों मिसल कहा जाता है। समझते कुछ भी नहीं। सिर्फ बुलातेरहते हैं बाबा आओ। भगवान सर्वव्यापी है ठिक्कर भितर में है तो ठिक्कर भितर को बोलो ना कि ठिक्कर से अब बाबा बन जाओ। अपने पर तो लज्जा आनी चाहिए हम रावण के संग में कैसे बन्दर भूलड़े रिछ आदि क्या2 बन गये हैं। बिल्कुल ही बेसमझ बन गये हैं। बाबा खुद कहते हैं हमने तुमको कितना समझदार बनाया। फिर तुम इतने बेसमझ बन पड़े हो। तुम कितने समझदार थे। अभी बिल्कुल ही बेसमझ बन पड़े हो। जब से भक्ति शुरू हुई है यह उल्टी बातें सुनते आये हो। बाप बैठ समझाते हैं पहले2 अव्यभिचारी भक्ति थी। शिव को ही पूजते थे। जिसने तुमको पूज्य बनाया उनकी ही पुजारी बन भक्ति की। यह तो समझ की बात है ना। बाप तुम बच्चों को समझाते हैं तो फिर तुमको भी टीचर बन समझाना चाहिए ना। सर्विस पर हाजिर रहना चाहिए। बाबा के पास कलकते से समाचार आया। देहली में फोन किया कि बड़ी कानफ्रेन्स मेंअंग्रेजी में बोलने वाला चाहिए। 10-20 मिनट का टाईम मिला है अमेरिकन के तरफ से सभी वहां आये हुये थे। वहां कोई अंग्रेजी में होशियार तो है नहीं। कानफ्रेन्स बड़ी अच्छी थी। सभी धर्म वाले आकर इकट्ठे हुये थे। देहली में मोहिनी को बोला कि आओ। क्योंकि दिल्ली से कलकत्ता कोई दूर थोड़ेही है। एरोपलेन में बैठा और यह पहुंचा। इसमें सुझने की तो दरकार ही नहीं। उनको कहा हम आवेंगे। परन्तु फिर गई नहीं। क्यों नहीं गई। कोई समाचार नहीं। बुखार एक आधा डीग्री हो तो भी सर्विसपर एकदम भागना चाहिए। योगी को कोई बात ही प्रवाह नहीं होती। यहां तो ऐसे हैं आधा पायन्ट बुखार होगा तो भी बस। चिन्तित हो जावेंगे। कहते हैं ना सर्प न मारेसर्प जो सराप मारे। तुम बच्चे तो कहां भी यह समझा सकते हो बाप भगवान कहते हैं सुप्रीम सोल आत्माओं को कहते हैं अपने को आत्मा समझ याद करो तो तुम्हारे पाप कट जावेंगे। सिर्फ मुझे याद करो और चक्र को याद करो। यही प्राचीन राजयोग बाप आकर सिखलाते हैं। तो उन्हों को भी मालूम पड़े। परन्तु बच्चों में इतना दम नहीं। आखीर वहां कोई गई नहीं। फिर आखीर पढ़करसुनाया। वह भीक्या सुनाया वह कुछ भी लिखा नहीं है। बाप समझाते हैं तुम तो यहां मरने लिये आये हो ना। शरीर का भान छोड़अपने को आत्मा समझो। यह मरना है ना। अपने को आत्मा समझते2 ही घर जाना है। एक बाप को याद करना है। बाप आते ही हैं जीते जी मरना सिखलाने। इस शरीर को भी भूलना है। इनसे अलग होना है। आर्डिनेन्स। तुमको काल खावेंगेनहीं। यह प्रक्टीस करना है। याद करते2 तुम शरीर छोड़ मेरे पास आ जावेंगे। कोई की याद आई तो पुनर्जन्म लेना पड़ेगा। पिछाड़ी को सजा बहुत खाते हैं। फिर पद भी छोटा मिलेगा। मोचरा न खाने वाले ही ऊंच पद पावेंगे। बाप इस शरीर द्वारा बैठ समझाते हैं। मैंने इस शरीर में प्रवेश किया है। इनकी भी वानप्रस्त अवस्था है। इन द्वारा

तुम बच्चों को पढ़ाता हूं। यह ब्रह्मा नहीं जानते। इनमें बाप प्रवेश होकर पढ़ाते हैं। नहीं तो कैसे पढ़ावे। उनको मुख तो चाहिए ना। मनुष्य गऊमुख पर जाने कितने धक्के खाते हैं। कितना दूर2 गऊमुख पर जाते हैं। यहां भी गऊ मुख है। 700 सीढ़ी है। है सभी फालतू। सिर्फ पत्थर को गऊ का मुख है। चश्मा(झरना) का पानी बहता है। चश्मे का पानी गर्म भी निकलता है। ढढा भी निकलता है। अभी तुम समझते हो गऊमुख किसको कहा जाता है। यह है नालेज। जो बाप इन द्वारा समझाते हैं। वह फिर अमृत समझ कितने धक्के खाते हैं। वास्तव में यह है ज्ञान की बातें। उन्होंने फिर कृष्ण को नालेजफुल कह दिया है। कृष्ण को याद करना तो बहुत सहज है। भक्तिमार्ग में तुम कृष्ण को बहुत याद करते हो। कृष्ण के लिये तुम जैसे कि मरते हो। जैसे वह भूख हड़ताल आदि करते हैं ना। तुम भी हड़ताल करते हो सात रोज खाते पीते नहीं हो। यह कोई मालूम नहीं रहता कृष्ण मिलेगा वा नहीं। मुफ्त में हड़ताल कर देते। उन लोगों को तो फिर भी कुछ न कुछ मिल जाता है, कोई छुड़ाते लेते हैं। तुमको तो न कोई छुड़ाते हैं न कुछ मिलता है। अभी बाप कहते हैं बच्चे तुम अपन कोप्रिन्सि-प्रिन्सेज तो समझो। बाबा को तो बहुत खुशी होती है हम यह बनुंगा। पढ़ाई यह भी पढ़ते हैं तुम भी पढ़ते हो। इनको को तो बहुत खुशी रहती है। मैं तो बूढ़ा हूं तुम जवान हो। मेरे अन्दर में तो बहुत खुशी रहती है हम इस पढ़ाई से यह ना० बनेंगे। पहले तो जरूर प्रिन्स बनेंगे। तुम बच्चे भूल क्यों जाते हो। आत्मा में बुधि है ना। ख्याल करो ओ हो। हम आत्माओं को बाप पढ़ाते हैं। बाप खुद कहते हैं मैं इस साधारण तन में प्रवेश करता हूं। यह है भाग्यशाली रथ। मनुष्य का ही रथ चाहिए ना। बाप कहते हैं मैं इनमें प्रवेश कर तुमको सुनाता हूं। यह भी सुनते जाते हैं। नर से ना० बनने को नालेज सुन रहे हैं। सभी से नम्बरवन पतित और वानप्रस्त अवस्था में प्रवेश करता हूं। यह बूढ़ा भी पढ़ता है। दिल में है मैं भी नर से ना० बनता हूं। सतयुग में हम महलों में जावेंगे। भगवान पढ़ाते हैं उसमें गडबड़ थोड़े ही हो सकती है। हम तो सभी स्टुडन्ट्स हैं ना। सभी आपस में भाई2 हैं। एक बाप से पढ़ते हैं विश्व का मालिक बनने लिये। तो इतनी खुशी है? कई कहते हैं हम बन्धन में है। बच्चों का, पति का बन्धन है। बाप कहते हैं पढ़ना तो है ना। बाप सिर्फ कहते हैं मुझे याद करो। और 84 का चक्र भी समझना सहज है। विकारी न बनना है। परन्तु लाचारी पकड़ लेते हैं तो बाप कहते हैं तुम्हारा दोष नहीं। क्योंकि तुम परवस हो। इस जन्म को छोड़ो। अनेक जन्मों के पाप सिर पर हैं उन्हों को तो याद की यात्रा से काटो। तुम बाप की याद में लग जाओ। वह सभी हैं कोड़े। तुम हो ब्राह्मण। तुमको भूं2 कर आप समान बनाना है। कहते भी हैं बाबा फलानी ब्राह्मणी ने हमको भूं2 कर आप समान बनाया है। तुम बच्चे जानते हो सतगुरु मिलता ही है संगम पर। बाकी तो अनेक गुरु हैं। द्वापरकलियुग में। क्या2 करते रहते हैं। कितने बड़े2 टाईटल देते हैं। श्री श्री 108 जगद्गुरु। वास्तव में जगद्गुरु तो सिवाय एक के और कोई मनुष्य हो न सके। परन्तु किसको बुधि में आता नहीं। रीढे मिरई सभी बूथ कारी। जगतगुरु अर्थात सारी सृष्टि का गुरु वह तो एक है ना। जो सभी की सदगति करते हैं। फिर यह टाईटल उन्होंने क्यों रखा है। परन्तु सभी मनुष्य हैं जैसे बूथ कारी रीढे। गदहे का भी मिसाल देते हैं ना। कितना भी श्रृंगार करो फिर मिट्टी में मैला हो जावेगा। बाप भी इतना श्रृंगार करते हैं यह बनने लायक बनाते हैं फिर भी सारा श्रृंगार गंवा देते हैं। माया एक ही थप्पड़ से सारा श्रृंगार उड़ा देती है। इसलिये रावण के सिर पर गदहा दिखाते हैं। अभी बाप कहते हैं भक्ति की बातें सभी भूल जाओ। एक बाप को ही बहुत प्यार से याद करना है। बाकी तो यह सभी खत्म हो जाना है। सभी मिट्टी में मिल जावेगा। कोई के भी हाथ में कुछ नहीं आवेगा। गायन भी है मिरवा मौत मलुका का शिकार। अन्दर में बड़ी खुशी होती है कब विनाश हो तो हम स्वर्ग में जावें। बाप कहते हैं अभी तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय। फिर तो डीग्री कम हो जावेगी। अभी तो भगवान आकर पढ़ाते हैं। कितने भाग्यशाली हो। भगवानुवाच मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूं। वह गीता सुनाने वाले तो तोते मिसल सिर्फ सुनाते रहते हैं। समझते कुछ भी नहीं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग। रूहानी मीठे2 बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।